मानक हिंदी एवं भोजपुरी मुख्य क्रिया की रूप रचना : एक तुलनात्मक अध्ययन

एम. फिल. हिंदी(भाषा प्रौद्योगिकी) उपाधि हेतु

लघु शोध-प्रबंध

सत्र : 2013-14

ज्ञान शांति मैत्री

शोध निर्देशक

डॉ.अनिल कुमार पाण्डेय

एसोसिएट प्रोफ़ेसर

(भाषा प्रौद्योगिकी विभाग)

शोधार्थी

प्रतिभा सिंह

एम.फिल.

हिंदी (भाषा प्रौद्योगिकी)

भाषा विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1996 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

गांधी हिल्स, वर्धा-442005 (महाराष्ट्र) भारत

दूरभाष : 07152-251170, वेबसाइट: www.hindivishwa.org

2.3.3- हिंदी एवं भोजपुरी की क्रिया संरचना

2.3.4- हिंदी एवं भोजपुरी कृदंत

अध्याय-3

मानक हिंदी एवं भोजपुरी मुख्य क्रिया के प्रकार.....74

3.1-हिंदी मुख्य क्रिया के प्रकार .....74-88.

3.2-भोजपुरी मुख्य क्रिया के प्रकार .....89-97.

3.3- तुलना

3.3.1-हिंदी एवं भोजपुरी मुख्य क्रिया.....98-100.

उपसंहार .....102-104.

संदर्भ ग्रंथसूची .....105-106.

भूमिका

भाषा यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करता है। प्रत्येक भाषा की अपनी एक अलग प्रतीक व्यवस्था होती है, जिसमें ध्वनि, शब्द, चिन्ह, वाक्य आदि के माध्यम से मानव अपने भावों तथा विचारों को अभिव्यक्त करता है। भाषाएं इसी प्रतीक भिन्नता के कारण एक दूसरे से भिन्न होती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि कोई भी भाषा अन्य किसी भी भाषा से पूर्ण रूप से स्वतंत्र होती है, और अपने व्याकरणिक नियमों में गठित होती है, जिसको हम भाषाई संरचना कहते हैं । यही आंतरिक व्यवस्था उस भाषा का व्याकरण कहलाता है।

इस प्रकार दो भाषाओं की लिपि, ध्वनि, रूप, वाक्य संरचना और व्याकरण आदि स्तरों पर तुलना कर सकते हैं। इसी अध्ययन को "तुलनात्मक अध्ययन" की संज्ञा दी जाती है।

इस तुलनात्मक अध्ययन से हमें भाषाओं की प्रकृति का ज्ञान मिलता है तथा उनमें पाये जाने वाले समान व असमान तत्वों की खोज की जाती है और उनकी समानता व असमानता के कारण भी ढूंढ़ने का प्रयास किया जाता है कि ये भाषाएं क्यों एक दूसरे से भिन्न हैं।

संप्रेषण तथा व्याकरणिक दृष्टि से भाषा की आधारभूत इकाई वाक्य है । वाक्य में क्रिया का स्थान महत्वपूर्ण होता है। क्रिया संरचना में मुख्य क्रिया अर्थात धातु कोशीय अर्थ प्रदान करती है तथा उसके साथ जुड़ी सहायक क्रिया से व्याकरणिक सूचना की अभिव्यक्ति होती है।

हिंदी भाषा मुख्यतः उत्तस्प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचलप्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, झारखंड आदि क्षेत्रों में बोली जाती है । देश के बाहर भी **जैसे-** मारीशस, सूरीनाम, त्रिनिनाद, टोबेगो आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।

हिंदी भाषा का क्षेत्र काफी व्यापक व विस्तृत है इसके अंतर्गत कई उपभाषाएं व बोलियां आती हैं । **जैसे-** खड़ीबोली, ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, पहाड़ी हिंदी, भोजपुरी हिंदी, मगही हिंदी आदि किन्तु इन विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली हिंदी एवं उनकी बोलियों में रूपगत व ध्वनिगत भिन्नता है।

राजकाज चलाने के लिए किसी न किसी भाषा की आवश्यकता पड़ती है। अपने समय में संस्कृत, पालि, महाराष्ट्री, प्राकृत अथवा अपभ्रंश राजभाषा रही है किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद14 सितम्बर 1949 ई. को भारत के संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया।

राजभाषा के रूप में जिस हिंदी का प्रयोग होता है, वह इन क्षेत्रीय प्रभावों से मुक्त है। राजभाषा के रूप में मानक हिंदी वस्तुतःखड़ी बोली है। खड़ी बोली को ही मानकीकृत करके मानक हिंदी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

भोजपुरी हिंदी की ही एक बोली है। भोजपुरी का क्षेत्र विस्तार और प्रयोग क्षेत्र हिंदी की अन्य बोलियों से अधिक है।

यद्यपि भोजपुरी हिंदी की ही एक बोली है फिर भी हिंदी और भोजपुरी की रूप व ध्वनि में पर्याप्त भिन्नतायें हैं। यही कारण है कि भोजपुरी की ध्वनि ,रूप आदि को लेकर शोध कार्य किए गये हैं। प्रस्तुत शोध कार्य इन्हीं शोधों के क्रम में एक नवीन प्रयास है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में मुख्य क्रिया के स्तर पर हिंदी और भोजपुरी में उपस्थित समानता व असमानता को दिखाने का प्रयास किया जाएगा।